<u>घर का अड़ाण</u>

जीतना है दुनिया को अगर
सर झुका कर चलना है,
स्वाभिमान से जीने के लिए
सर उठा कर चलना है,
जीवन की इस हकीकत को
दिल से हमे समझना है,
घर की छत और दीवारो को
अडाण सुरक्षित रखता है,
जिस घर के बच्चे समझदार
अडाण का आदर करते है,
पर थोड़ी शक्ति मिल जाने पर
आँख दिखाने लगते है,
फिर घर में पडा अडाण देखकर
उस को तोड़ने लगते है,
फिर घर की दीवारें गिरने पर
अडाण ढूंढते फिरते है,
क्यूँ अडाण को पैसा आने पर
बोझ समझने लगते है,
बनना है तो अच्छा इंसान बनो
मत गिरने दो दीवारों को,
जीवन मे इंसान को एक दिन
अडाण घर का बनना है,
सबको अपना समझ समझ कर
स्वार्थ छोड़कर रहना है,
जब संकट की घड़ी आ जाएं तो
अपनो का साथ निभाना है,
बुरे समय में अपने ही अपनो का
हरदम साथ निभाते है,
जो अपनो को छोड़कर दूजे को
अपने गले लगाते है,
ऐसे इंसान ही अपने जीवन मे
सदा दुख ही पाते है,
(अडाण - घर का बुजुर्ग)
जय हो।

- गोपाल कृष्ण व्यास